Department of Economics

L.N.D. COLLEGE, MOTIHARI (BIHAR)

(a constitueant unit of B.R.A. University, Muzaffarpur (Bihar)

NAAC Accredited 'B+'

Topic : पूर्ति (SUPPLY)

BA Economics Part I MJC/MIC/MDC (Semester I)

Instructor

Dr. Ram Prawesh

Guest Faculty (Department of Economics)

L.N.D. COLLEGE, MOTIHARI (BIHAR)

पूर्ति (SUPPLY)

किसी वस्तु की पूर्ति से अभिप्राय वस्तु की उन मात्राओं से है, जिन्हें एक विक्रेता विभिन्न सम्भव कीमतों पर एक निश्चित समय में बेचने को तैयार रहता है। माँग की भाँति पूर्ति भी किसी समय की अवधि तथा कीमत से जुड़ी होती है।

परिभाषाएँ (Definitions)

थॉमस के अनुसार, "वस्तुओं की पूर्ति वह मात्रा है जो एक बाजार में किसी निश्चित समय पर विभिन्न कीमतों पर बिकने के लिए प्रस्तुत की जाती है। "1

प्रो. मेयर के अनुसार, "पूर्ति किसी वस्तु की मात्राओं की अनुसूची है, जो विभिन्न कीमतों पर किसी विशेष समय या समय की अवधि में, उदाहरणार्थ एक दिन एक सप्ताह आदि जिसमें पूर्ति की सभी दशाएँ स्थिर हों, विक्रय के लिए प्रस्तुत की जायँ। "

पूर्ति तालिका (Supply Schedule)

विभिन्न कीमतों पर बाजार में वस्तु की बेची जाने वाली मात्राओं को यदि तालिका में व्यक्त कर दिया जाए तो इसे पूर्ति तालिका कहते हैं। इस प्रकार पूर्ति-तालिका वह तालिका है जो किसी वस्तु की विभिन्न संभव कीमतों पर बिक्री के लिए प्रस्तुत की जाने वाली पूर्ति की विभिन्न मात्राओं को प्रकट करती है।
पूर्ति तालिका दो प्रकार की होती है-
1. व्यक्तिगत पूर्ति तालिका (Individual Supply Schedule)
2. बाजार पूर्ति तालिका (Market Supply Schedule)

1. व्यक्तिगत पूर्ति तालिका (Individual Supply Schedule)- यह तालिका एक विक्रेता के पूर्ति फलन को स्पष्ट करती है। एक विक्रेता किसी समयावधि विशेष में विभिन्न कीमतों पर वस्तु की जितनी मात्रा बाजार में बेचने को तैयार रहता है, उसे यदि तालिका के रूप में प्रदर्शित किया जाय तो इसे हम व्यक्तिगत पूर्ति तालिका कहते हैं।

2. बाजार पूर्ति तालिका (Market Supply Schedule) - बाजार की सभी फर्में अथवा विक्रेता मिलकर विभिन्न कीमतों पर बाजार में कुल कितनी मात्रा बेचने को तैयार हैं इसका एक तालिका में प्रदर्शन बाजार पूर्ति तालिका करती है। इस प्रकार बाजार पूर्ति तालिका से अभिप्राय बाजार में किसी विशेष वस्तु का उत्पादन या पूर्ति करने वाली सभी फर्मों की पूर्ति के जोड़ से है। किसी वस्तु का उत्पादन करने वाली सभी फर्मों के जोड़ को उद्योग कहते हैं। अतएव बाजार पूर्ति तालिका समस्त उद्योग की पूर्ति तालिका होती है। इसके द्वारा बाजार में विभिन्न कीमतों पर सभी फर्मों की किसी विशेष वस्तु की कुल पूर्ति प्रकट होती है।

वस्तु की पूर्ति के निर्धारक घटक (Determinants of Supply of a Commodity)

1. वस्तु की कीमत (Price of the Commodity) - किसी वस्तु की पूर्ति तथा कीमत में प्रत्यक्ष सम्बन्ध होता है। सामान्य दशाओं में कीमत बढ़ने से वस्तु की पूर्ति बढ़ती है तथा कीमत कम होने से वस्तु की पूर्ति घटती है।

2. सम्बन्धित वस्तुओं की कीमत (Price of Related Goods)-किसी वस्तु विशेष की पूर्ति अन्य सम्बन्धित वस्तुओं की कीमत से अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित होती है, जैसे चावल की कीमत में वृद्धि होने से गेहूँ की पूर्ति गिर जाती है। इसका कारण यह है कि चावल की कीमत में वृद्धि निर्माताओं को चावल के अधिक उत्पादन के लिए प्रोत्साहित करती है। इसलिए गेहूँ उत्पादन कम होगा एवं उसकी पूर्ति घट जायेगी।

3. उत्पादन साधनों की कीमत (Prices of Production Factors) - उत्पत्ति के साधनों की कीमत बढ़ने पर उत्पादन लागत में भी वृद्धि हो जाती है जिसके कारण उत्पादकों का लाभ घटता है और वे उत्पादन कम कर देते हैं। इसके विपरीत उत्पत्ति साधनों की कीमत कमी उत्पादन लागत में कमी करके पूर्ति में वृद्धि करती है।

4. तकनीकी स्तर (Technological Level) - तकनीकी स्तर में परिवर्तन से नवीन एवं कम लागत वाली उत्पादन तकनीकों का आविष्कार होता है जिससे उत्पादन लागत में कमी तथा वस्तु की पूर्ति में वृद्धि होती है।

5. फर्मों की संख्या (Number of Firms)- किसी वस्तु की बाजार पूर्ति फर्मों की संख्या पर भी निर्भर करती है। फर्मों की संख्या अधिक होने पर पूर्ति अधिक होती है। इसके विपरीत फर्मों की संख्या कम होने पर पूर्ति कम हो जाती है।

6. फर्म के उद्देश्य (Goal of the Firm)- यदि फर्म का उद्देश्य लाभ को अधिकतम करना है तो केवल अधिक कीमत पर ही अधिक पूर्ति की जायेगी। इसके विपरीत यदि फर्म का उद्देश्य बिक्री या उत्पादन या रोजगार को अधिकतम करना है तो वर्तमान कीमत पर भी अधिक पूर्ति की जायेगी।

7. भविष्य में सम्भावित कीमत (Expected Future Price)- भविष्य में वस्तु की कीमत में होने वाले परिवर्तन की सम्भावना भी पूर्ति को प्रभावित करती है। यदि भविष्य में वस्तु की कीमत बढ़ने की सम्भावना हो तो वर्तमान में पूर्ति घट जाती है। इसके विपरीत यदि भविष्य में कीमत घटने की सम्भावना हो तो वर्तमान में पूर्ति बढ़ जाती है।

8. सरकारी नीति (Government Policy)- सरकार की कर (Taxes) तथा अनुदान (Subsi- dies) सम्बन्धी नीतियों का वस्तु की बाजार पूर्ति पर प्रभाव पड़ता है। अप्रत्यक्ष करों में वृद्धि होने के फलस्वरूप सामान्यतः पूर्ति कम होती है। इसके विपरीत अनुदानों के कारण पूर्ति में वृद्धि होती है क्योंकि उत्पादक अधिक उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं।